P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मध्यप्रदेश की विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह पर वृत्त चित्र निर्माण

हरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान
शोद्यार्थी,
प्रबंधन विभाग,
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
सामाजिक विज्ञान
विश्वविद्यालय,
महू, इंदौर, म.प्र., भारत

सारांश

ब्रिटिश इतिहासकार टिमोन्थी ऐष ने मनुष्य जाति के विज्ञान के प्रयासो के बारे में वर्णन करते हुए इसे संस्कृति के सटीक रिकार्ड और उपर्युक्त अनुवाद का एक तरीका बताया। एक इथिनोग्राफिकल फिल्म को परिभाषित करना कठिन है यह मनुष्य जाति के विज्ञान से संबद्ध है। प्रथम विश्व युद्ध से लेकर भारत की स्वतंत्रता तक के काल में फिल्में जागरूकता फैलाने के लिए एक सशक्त माध्यम रही है। फिल्में, लोगो के मन को बदलने में एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हुई है। फिल्में सामाजिक मुद्दों–जैसे महिला सशक्तिकरण, दलित उत्थान, सामाजिक सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता, छुआछूत, साम्प्रदायिकता, अत्याचार, पूंजीवाद, राजनीति, भाषा, भाईचारा, गरीबी आदि विषयों पर समाज में जागरूकता फैलाती है, साथ ही फिल्में जनता को सामाजिक एवं राजनैतिक मुद्दों के प्रति भी जागरूक व शिक्षित करती है। रूढ़िवादित तथा सामाजिक कुरीतियों को तोड़ने में फिल्में महत्वपूर्ण योगदान देती है। विशेषकर महिलाओं के प्रति समाज में समानता का दर्जा दिलाने में फिल्मों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। भारत सरकार ने लगभग 550 समुदायों को जनजाति समुदाय के रूप में चिन्हित किया है तथा 75 समुदायों को विशेष रूप से कमजोर जनजाति वर्ग के रूप में घोषित किया है, जो भारत के 15 राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में फैली हुई जनजातियाँ है। जनजातियॉ देश के कुल क्षेत्रफल के 15 प्रतिशत हिस्से में निवास करती है, हालॉकि जनसंख्या का केवल 8 प्रतिशत है। ये जनजातियॉ देश के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मुख्य शब्द : पीवीटीजी (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह), वृत्तचित्र।

प्रस्तावना

''डाक्युमेंट्री'' शब्द का प्रथम उपयोग 1914 में लैंड ऑफ हंटर्स में किया गया है। जॉन हिरसन को डाक्युमेंट्री का जनक माना जाता है। विभिन्न प्रकार के विषयों पर डाक्युमेंट्री बनाई गई है जो किसी कार्य या घटना के प्रदर्शन से जुड़ी होती है। यह क्रांतिकारी फिल्मिंग का आधाार है। प्रत्येक छवि, दस्तावेज, जो कि किसी घटना के सच का सबूत है, अधिक महत्वपूर्ण है बजाय काल्पनिक के, यह वह है जिसे समाज स्वीकार नहीं कर सकता।

आज हम जिस दौर में जी रहे है, वहॉ प्रिंट मीडिया में अखबार, पत्रिकाए, पॉम्पलेट आदि मौजूद है वहीं इलेक्ट्रानिक्स मीडिया में न्यूज, धारावाहिक, सोशल मीडिया, डाक्युमेंट्री फिल्में व अन्य फिल्में भी मौजूद रही है। आज अगर जनजातियों की छवि का निमार्ण करना है तो इन सभी माध्यमों का उपयोग होना चाहिए। मीडिया में भी इनकी खासियतों, राष्ट्रभक्ति, अंतर्राष्ट्रीय महत्व, सांस्कृतिक महत्व, विभिन्नताओं का जिक्र सकारात्मक रूप से होना चाहिए। डाक्युमेंट्री देश–विदेश में देखी जाती है और यह विशेष वर्ग को बहुत पसंद आती है, इन्हे ज्यादातर पढ़ा लिखा वर्ग देखता है। सबसे महत्वपूर्ण है कि यह वास्तविक स्थिति को बताने का सबसे अच्छा माध्यम है। चूंकि हर माध्यम के अपने फायदे और नुकसान है वैसे ही इसके भी है, यह विशिष्टता में सीमित हो जाती है, यह मँहगी है, इसमें मनोरंजन का गुण कम है, लोग भारत जैसे देश में डाक्युमेंट्री देखना रूचिकर नहीं मानते, स्वयं जनजातियों की पहुंच से दूर है, परंतु इस देश का वह वर्ग जो फैसले लेता है, जो फैसलों में दखलअंदाजी करता है, जो निर्णय को मोड़ सकता है, वह डाक्युमेंट्री के बारे में जानता है, देखता है और पसंद भी करता है। चूंकि प्रत्येक अध्ययन में समय–सीमा, आर्थिकता बहुत बड़ी भूमिका निभाते है।

मध्य प्रदेश में विशेष रूप से पिछड़ी हुई कमजोर जनजातियॉ (PVTG, Particularly Vulnerable Tribal Group) in Madhya Pradesh

छत्तीसगढ के विभाजन के पूर्व अविभाजित मध्यप्रदेश में कुल 7 जनजाति समूहों को विशेष रूप से कमजोर (**PVTG**) जनजातियों का दर्जा प्राप्त था। परंतु नए राज्य छत्तीसगढ के गठन के पश्चात् मध्यप्रदेश में मात्र तीन ही पी.वी.टी.जी. जनजातियॉ रही जो इस प्रकार है –

भारिया जनजाति, पातालकोट छिंदवाड़ा

भारिया का शाब्दिक अर्थ है अस्पष्ट, वह जो अपरिचित हो। बाहरी लोगों से अलग करते हुए भारिया स्वयं को भूमिया कहते है, जहॉ भूमिया का अर्थ है जमीन एवं मिट्टी के स्वामी। भारिया अपने मूल से अपरिचित है।

बैगा जनजाति, मंडला, डिंडोरी, बालाघाट, उमरिया तथा शहडोल

बैगा जनजाति बैगाचक क्षेत्र में निवास करती है, जिसका नाम इसी जनजाति के नाम के आधार पर रखा गया है। बैगा शब्द का अर्थ है पुजारी, तथा ये जनजाति पंडित, पंडा के रूप में जानी जाती है। इनके निवास स्थान में बालाघाट, बिलासपुर, मंडला, राजनांदगांव, शहडोल जिलो के कुछ हिस्से शामिल है, मुख्य रूप से इनकी बहुलता बैहर तहसील, बिलासपुर, डिंडोरी, मंडला तथा पुष्पराजगढ़ में है।

सहरिया जनजाति

सहरिया जनजाति मध्यप्रदेश के ग्वालियर, दतिया, मुरैना, भिंड, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, श्योपुर, विदिशा, रायसेन, बुंदेली जनपद में निवासरत है। इनका कुछ हिस्सा राजस्थान के कोटा, शाहबाद तथा किशनगंज जिलों में भी रहता है।

साहित्य अवलोकन

भारत में सबसे पहला वृत्तचित्र हरिशचंद्र सखाराम भायवाडेकर द्वारा निर्मित मल्लयुद्ध चित्रांकित किया गया था। वृत्तचित्रों के पितामह की संज्ञा जॉन ग्रियर्सन को दी गई है उन्होनें इसे द क्रिएटिव ट्रीटमेंट ऑफ एक्चुएलिटी कहा। जीवन की वास्तविकता स्वरूप अर्थात यथार्थ को वृत्तचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें विषय में अनुसंधान, जानकारियॉ, विशेषज्ञों की राय शामिल होती है। ये बड़ी फिल्मों से लेकर छोटे विज्ञापन, कार्टून फिल्मों के रूप में भी मौजूद हो सकता है। ये किसी भी विषय पर हो सकता है। इसका मूल उद्देश्य सूचना देना एवं प्रशिक्षित करना है। ये वास्तविक घटनाऍ, व्यक्ति, स्थान या परिस्थितियों पर आधारित होती है। वृत्तचित्र में वृत्त का अर्थ संपूर्णता से है। इसमें लेखन में सृजनात्मकता, कलात्मकता और रोचकता शामिल होती हैं। अंग्रेजी शब्दकोषों के अनुसार डॉक्युमेंट्री शब्द का संबंध डॉक्युमेंट से है। डॉक्युमेंट्री के विभिन्न स्वरूप है– सूचनात्मक डॉक्युमेंट्री – इसमें तथ्यों द्वारा सूचना देते हुए दर्शकों को कुछ सीखने का अवसर देने व सूचनात्मकता शामिल होती है। कहानी डॉक्युमेंट्री – इस प्रकार की डॉक्युमेंट्री कल्पना से उद्भव विषय पर बनाई जाती है । यात्रा वृत्तांत डॉक्युमेंट्री – इसमें यात्रा में आने वाली कठिनाईया, मौसम, स्थान, लोगो का चरित्र, खान–पान आदि के बारे में जानकारी दी जाती है। सामाजिक डॉक्युमेंट्री – इसमें समाज में होने वाले उतार चढ़ाव एवं लोगो की मानसिकता दर्शाई जाती है। शोध परक डॉक्युमेंट्री – इस श्रेणी की डॉक्युमेंट्री का उद्देश्य सच्चाई को उजागर करना व दर्शकों को सही और गलत की जानकारी देना है। ऐतिहासिक डॉक्युमेंट्री–इसमें ऐतिहासिक तथ्यों को दर्शाया जाता है। शिक्षा, सूचना तथा संदेश की प्रधानता के कारण वृत्तचित्र को विशुद्ध जनसंचार माध्यम कहा जाता है। इससे दर्शकों में ज्ञान वृद्धि होती है। इसमें जो कुछ जैसा है उसे उसी रूप में प्रस्तुत किया जाता है और यही इसका लक्ष्य है। देश में भारतीय फिल्म डिवीजन की स्थापना 1948 में मुंबई में हुई इसका प्रमुख उद्देश्य सूचना, संदेश व शिक्षाप्रद वृत्तचित्र तैयार करना था। वर्तमान समय में भारत जैसे देश में भी वृत्त चित्र का निर्माण बढा है। जिसकी वजह उसके दर्शकों का बढना है। दर्शकों की रूचि के पीछे उन्नत तकनीकें, कहानियॉ कहने के ढंग में परिवर्तन, रोचक विषयों का चयन, आकर्षण प्रस्तुतीकरण, सरल भाषा स्पष्टता शामिल है। भारत सरकार द्वारा 75 जनजातीय समूहों को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। भारत में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या – 2011 की जनसंख्या के अनुसार– 10,42,81,034 कुल, (ग्रामीण – 9,38,19,162, शहरी – 1,04,61,872) दशकीय जनसंख्या वृद्धि कुल – 23.7 प्रतिशत (दशकीय जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण – 21.3 प्रतिशत तथा शहरी–49.7 प्रतिशत),भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति है। भारत की कुल अनुसूचित जनजाति का 14.7 प्रतिशत हिस्सा मध्यप्रदेश में है। निम्न सूचकांको के आधार पर भारत के 75 आदिवासी समूहों को विशेष पिछड़ी हुई जनजाति की श्रेणी में रखा गया। इस श्रेणी का निर्धारण निम्न मापदंडो के आधार पर किया गया है ।

1. कृषि में पूर्व प्रोद्योगिकी स्तर,
2. साक्षरता का न्यूनतम स्तर
3. अत्यधिक पिछड़े एवं दूरदराज के क्षेत्रों में निवास करना,
4. स्थिर या घटती हुई जनसंख्या

आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है जिसका अर्थ है मूल निवासी। भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत (लगभग 10 करोड़) हिस्सा आदिवासियों का है। भारत के संविधान में इन्हें 5वीं अनुसूची में अनुसूचित जनजातियों के रूप में मान्यता दी गई है। मध्यप्रदेश में आदिवासी समूह की कुल जनसंख्या 1.2233 करोड़ से बढकर 1.5316 करोड़ हो गई यानि की लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आदिवासी समूहों में लिंगानुपात वर्ष 2001 में 947 था जो 10 वर्षो में बढकर 984 हो गया। पिछले दो दशकों में मध्यप्रदेश में मौजूद विशेष रूप से पिछड़ी जनजातीयों (बैगा, भारिया, सहरिया) की संख्या में वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 में सहरिया समुदाय की जनसंख्या 4.502 लाख थी जो वर्ष 2011 में बढकर 6. 149 लाख हो गई। इसी तरह बैगा समूह की जनसंख्या 3.329 लाख थी जो 2011 में बढकर 4.145 लाख हो गई। वहीं भारिया की जनसंख्या 1.524 लाख से बढकर 1.932 लाख हो गई। भारिया समाज के व्यक्ति जन्म, विवाह व मृत्यु संस्कारों का आयोजन करते है। इन संस्कारों के पीछे भारिया जनजाति अपने सामूहिक प्रक्रियाओं, अनुष्ठानों, रीति–रिवाजों व मान्यताओं को जीवित रखना चाहती है। भारिया समाज में सभी आयु वर्ग के मृतक

संस्कार सामान्य रूप से किए जाते है। यहॉ सभी आयु वर्ग को जलाने का रिवाज है। म.प्र. के उत्तरी भाग में स्थित श्योपुर जिला, 5 तहसीलों यथा श्योपुर, बड़ौदा, विजयपुर, वीरपुर तथा करहाल से मिलकर बना है, जिसका क्षेत्रफल कुल 6606 वर्ग किलो मीटर है। आयाताकार ये जिला चंबल नदी के समीप है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहॉ की कुल जनसंख्या 6,87,952 और 104 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. का जनसंख्या घनत्व है। यहॉ राजस्व ग्रामों की कुल संख्या 607 है। जिले की कुल जनसंख्या में 23.5 प्रतिशत जनसंख्या सहरिया जनजाति की है जो कि 345 ग्रामों में मौजूद है। ऐसा माना जाता है कि जंगल के निवासी होने तथा जंगल के राजा शेर की समीपता के कारण इन्हे सहरिया कहा जाता है । विद्वानों के अनुसार सहरिया शब्द, 'सेहर' शब्द से मिलकर बना है जिसका अर्थ जंगल है।बैगा जनजाति मंडला, डिण्डोरी, शहडोल, अनुपपूर, उमरिया, राजनांदगांव, बिलासपुर, कवर्धा, सिवनी, छिंदवाड़ा एवं बालाघाट में निवास करती हैं। डिण्डोरी एवं बिलासपुर के बीच के भाग को बैगाचक कहते है। इन्हें आदिम जनजाति भूईयॉ की शाखा माना जाता है। बैगा जनजाति के लोग सदियों से वैद्य का कार्य करते आ रहे है। बैगा जनजाति में किसी की मृत्यु हो जाने पर जलाने और दफनाने दोनों की प्रथा अपनाई जाती है। बैगा समाज में धर्म के प्रति कोई स्पष्ट धारणा नहीं है। नागा उनका आदिम पुरूष है। वे स्वर्ग, नर्क और पुर्नजन्म को मानते है इसलिए 1931 की जनगणना में बैगाओं को एनिमिस्ट लिखा गया था और 1941 की जनगणना में बैगाओं ने अपने आप को हिन्दू घोषित किया। बैगाओं में कई लोक विश्वास है और आदिमपन ही उनका धर्म है। बैगा, भारिया और सहरिया जनजातियॉ सरल स्वभाव की होती है। इनकी अर्थव्यवस्था जंगलों एवं मजदूरी पर आश्रित है। लकड़ी काटना, जड़ी बूटियॉ, तेन्दुपत्ता, शहद, महुआ, लाख, गोंद, चीड़, चिरोंजी आदि जंगली उत्पादों को एकत्रित करना, मछली पकड़ना, पशु पालन, मुर्गी पालन इनके प्रमुख उद्यम है। वर्तमान समय में बैगा, भारिया और सहरिया के धरातलीय विन्यास में परिवर्तन हो रहा है। जिसकी वजह है जंगलों का खत्म होना तथा मजदूरी के लिए इनका अपने मूल क्षेत्रों से दूर होना। इनकी आर्थिक एवं स्वाभाविक स्थिति में परिवर्तन लाता है। इन जंगलो का आधिपत्य शासन के पास आ जाने से कहीं ना कहीं इनके मूल उद्यम से हटके इन्हें जीवन निर्वाह सीखना पड़ रहा है। जिससे इनके मूल स्वभाव व जीवन में परिवर्तन हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति की वर्तमान स्थिति का अध्ययन
2. बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति पर वृतचित्र निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन।

शोध प्रविधि

उपर्युक्त शोध गुणात्मक एवं विवरणात्मक शोध हैं, जिसकी प्रविधि के अन्तर्गत अध्ययन का समग्र में मध्यप्रदेश में विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियों को लिया गया है। अध्ययन की इकाई में बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति को लिया गया है। निदर्शन के अन्तर्गत बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति के गांवो का चयन परपसिव सेंपलिंग के आधार पर किया गया।

आंकड़ो का संकलन

आंकड़ो का संकलन प्राथमिक स्रोतों के द्वारा किया गया जिसमें समूह चर्चा एवं अवलोकन एवं द्वितीयक स्रोतों में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार के वार्षिक प्रतिवेदन, शोध–पत्रिकाएं आदि शामिल है।

बैगा वृत्त चित्र निर्माण की प्रक्रिया

चाणा क्षेत्र में मौजूद आंगनवाड़ी, प्राथमिक शाला एवं माध्यमिक शाला में, वहॉ पढते बच्चे, भोजन करते बच्चे, घरो से स्कूल के लिए निकलते बच्चे, व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रशिक्षण लेते बैगा जनजाति के लोग, योजनाओं की जानकारी देते एनजीओ, आर्थिक व सामाजिक दिक्कतो को दूर करते सहायता समूह, एक दूसरे को काम बांटती योजनाएं, एक दूसरे से अपने अनुभव बांटती स्त्रियॉ, स्वास्थ्य जागरूकता की कक्षाएं, सैक्सुएलिटी या कंडोम जैसी जानकारी देते वक्त महिलाओ व पुरूषो के चेहरो के हावभाव ये सब डाक्युमेंट्री फिल्म में भावनात्मक हिस्से की तरह है। इस क्षेत्र में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली अपनी शिक्षा संबंधी स्कीम चलाता है जहॉ इस क्षेत्र की जनजातियों पर अध्ययन करने वाले कई विशेषज्ञ मौजूद है, उनसे इंटरव्यु लिया जा सकता है। बैगा प्राधिकरण के अधिकारियों, स्कूल शिक्षकों तथा प्रशिक्षण देने वालो के भी इंटरव्यु लिए जा सकते है। बैगा कोदो एवं कुटकी की खेती करते है और अचानक मशीन आ जाने से कोदो व कुटकी छानने व कूटने की मेहनत बची है इस पर महिलाओं का क्या कहना है? और चक्की चलाने वालों का क्या कहना है? उनके इंटरव्यु भी लिए जा सकते है। बरसात के पहले घर ठीक करने के दृश्य, चाणा क्षेत्र में महुआ रस्सी निर्माण के दृश्य महत्वपूर्ण है। यह ट्राइबल स्कील डेवलपमेंट और स्थानीय संसाधनों के उपयोग का एक महत्वपूर्ण तरीका है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए पुरूष नसबंदी व महिला नसबंदी भी अच्छे विषय है। चुंकि बैगा उनके टेटू के लिए जाने जाते है, अतः उनके बनाने की प्रक्रिया के फिल्मांकन के बिना, बैगा डाक्युमेंट्री नहीं बन सकती। बैगा बच्चो के खेल जैसे सितोलिया, गिल्ली डंडा आदि भी फिल्माएं जा सकते है।

सहरिया पर वृत्त चित्र

जिला श्योपुर के करहाल क्षेत्र में म.प्र. की तीन प्रमुख पी.वी.टी.जी. में से एक सहरिया विशेष रूप से निवास करती है। करहाल एक छोटा सा कस्बा है जहॉ साधारणतः सभी सुविधाएं मौजूद है, इसे सहरिया के नजदीकी शहर के रूप में फिल्माया जा सकता है। सहरिया लोगों के घर के आसपास पत्थर की दीवार देखी जा सकती है, जो सुंदर भी है और सुरक्षित भी। यहॉ खेतों के आस–पास भी पत्थर की दीवारें बनी है जिन्हे अच्छे से फिल्माया जा सकता है। इस क्षेत्र में पत्थरों से बने भवन, घर मौजूद है जो सुंदर लगते है। यहॉ देसी गाय रात में भी झुंड में घूमती देखी जा सकती है, यह फिल्माने के लिए एक सुंदर दृश्य है जो पशुधन के साथ सहरिया का रिश्ता झलकाता है। दूर से ही खेतों में फव्वारें, पक्के रोड, पक्के घर देखे जा सकते है परंतु ये

अन्य समाज के लोगों के है जो कि आर्थिक रूप से कई गुना बेहतर है। पक्के मकानो के बीच झोपड़ी दिखाई देती है जो सहरिया का घर है, आस पास के क्षेत्र में सूखा ज्यादा है, यहॉ बारिश कम होती है। म.प्र. के राज्य ग्रामीण आजीविका मिषन जिला श्योपुर, प्रारंभिक ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रम, लोक नेतृत्व आधारित विकास प्रक्रिया अन्तर्गत बाल जागरूकता कार्यक्रम आदि सरकारी कार्यक्रमों के नियोजन को फिल्माया जा सकता है। संवहनीय आजीविका एवं जलवायु परिवर्तन अनुकुलन परियोजना (एस.एल.एस.सी.सी. प्रोजेक्ट) म.प्र. राज्य ग्रामीण आजिविका मिशन के अंतर्गत संचालित पशुधन एवं वाड़ी विकास कार्यक्रम बीएआईएफ जैसी कई परियोजनाए चल रही है, उनसे लाभ लेते लोग व आफिसर के इंटरव्यु लिए जा सकते है। करहाल में पानी के नल के एवज में ट्युबवेल से पानी दिया जाता है जो अच्छी व्यवस्था है। सिरसन वाडी, सिलपुरी, पालमपुर, मरेठा, रानीपुरा, पर्तवाड़ा, सरारी, गोठरा, जाखदा, पातालगढ, झरेर, पनवाड़ा जैसे कई गांव आस–पास मौजूद है जिन्हें फिल्माया जा सकता है। संबलगढ–श्यामपुर रोड़ पर अंदर की तरफ एक पानी का कुंड है जो सहरिया इलाके के करीब है, और वहॉ हनुमान जी का मंदिर है जिसे फिल्माया जा सकता है। सहरिया लोगो के द्वारा कंट्रोल राशन की दुकान पर जाना और सामान लाना, आदिम जाति कल्याण विभाग व अन्य विभागों के अधिकारियों का इंटरव्यु, प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के बच्चो को फिल्माना व मध्यान भोजन आदि वृत्तचित्र के लिए मोहक एवं आवश्यक दृश्य पैदा करते है। पंचवटी से पोषण आहार, बाल आरोग्य, पूरक–पोषण आहार, मंगल दिवस का आयोजन, गोद भराई कार्यक्रम, सहरिया समाज के लिए कुपोषण के विरूद्ध जंग, दाल वितरण योजना, लालिमा अभियान लाड़ली लक्ष्मी योजना जैसी कई योजनाओं से जुड़े लोगो से बात की जा सकती है और उनके इंटरव्यु लिए जा सकते है। मुख्य मंत्री स्थाई कृषि योजना, फीडर विभक्तिकरण योजना, दीनदयाल ग्रामीण विद्युतीकरण ज्योति योजना, गौरी ऑचल कक्ष, मॉडल शौर्यदल, महिला हिंसा के विरूद्ध सिलाई निर्माण ईकाई, म.प्र. राज्य ग्रामीण आजिविका मिशन, मृदा परीक्षण केन्द्र, स्कूल ड्रेस निर्माण ईकाई, प्रधानमंत्री आवास योजना, खेती लागत कम करने के उपाय, बीज उपलब्धता, सर्व शिक्षा अभियान, दुलदुल घोड़ी नृत्य, सह विकास यात्रा कार्यक्रम, सौभाग्य योजना, आचार्य विद्यासागर गौ संवर्धन योजना, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर जैसी कई योजनाए है जिन पर फिल्मांकन किया जा सकता है। सहरिया लोगो में जो गांव जंगल किनारे है उनके अपने–अपने पेड़ बटे हुए है, उनके वन्य उपज लाने, साफ करने व बेचने की प्रक्रिया को फिल्माया जा सकता है। करहाल के पास कुनो नदी के तट पर स्थित पालपुर का किला, कूनो वन्य प्राणी क्षेत्र, गौंड व सिंधिया राजाओं की कीर्ति का जीवंत स्मारक, दीवाने आम, रानी महल, दरबार हॉल में सोन घटा, नरसिंह महल, चंड सागर, शेरशाह सूरी के सिपह सलाहकार का मकबरा, भूतेश्वर नागदा मंदिर, श्री हजारेश्वर महादेव, बड़ौदा किला, राजा इंदसिंह एवं किशोर दास की छतरिया, कर्बला घाट, छिमछिमा बालाजी मंदिर, गुप्तेश्वर मंदिर, श्री लक्ष्मी नारायण एवं टोडी गणेश जी, गुरूद्वारा आदि क्षेत्र मौजूद है जहॉ सहरिया लोग भी जाना पसंद करते है और इन स्थानों को फिल्माना एक अच्छी डाक्युमेंट्री बनाने के लिए जरूरी है।

भारिया पर वृत्त चित्र निर्माण

जमीन जो पत्थरों से लबालब भरी हुई है, उस पर खेती करते भारिया, जंगलो में अपने–अपने हिस्सों में जाकर वन उपज लाते भारिया, ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों को कुछ पलो में चढ़ जाते भारिया, अपने पशुओं के लिए घर बनाते, अपना घर बरसात से बचाने की कोशिश करते, पहाड़ो के अपने देवताओं को पूजते भारिया, जमीन पर प्राकृतिक हलचल से बना गड्डा, जिसमें 12 गांव पातालकोट कहलाते है, और उनमें अपने खूबसूरत घरों में रहता भारिया, ये सारा दृश्य डाक्युमेंट्री फिल्म के लिए अनिवार्य से है। यहाँ उँचाई से जमीन पर लिए जाने वाले दृश्यों की भरमार है। सुंदर सूर्योदय एवं सूर्यास्त, चारो तरफ पहाड़ो की श्रृंखला इसे खूबसूरत बनाती है। छोटे बच्चो के स्कूल व हॉस्टल, उनकी गतिविधियाँ, गांवो में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, आम के पेड़, शासकीय नवीन आदिवासी कन्या आश्रम गैलडुब्बा, वेश–भूषा, सोलर उर्जा से बने उपकरण, ट्युबवेल से पानी भरते हुए लोग, लकड़ी रखने व भुट्टे रखने के स्टैण्ड, सीमेंट, डामर व कच्चे रोड, रेत की बोरियों से बने बांध, पीने के पानी के लिए संघर्ष, घनी वादिया और कोहरा फलदार वृक्ष, अपने ही रीति रिवाज करते लोग, छोटे कुंड, गर्मियों में जिनमें गंदा पानी भरा है, पानी की बैचेनी से तड़पता भारिया, सामुदायिक भवन, गौंड व भारिया के बीच का रिश्ता, बिजली कनेक्शन के लिए संघर्ष, अंधेरो में आखरी डूबे गांव, चलती परियोजनाएँ, मिट्टी में गाड़ते शव, बाजार में जाकर बेचते अपने उत्पाद, आवागमन के साधन, तामिया ब्लॉक, भारिया पर डाक्युमेंट्री बनाने के लिए अनिवार्य हिस्सा है। गौंड व भारिया में घरो की डिजाईन, खान–पान, रीति–रिवाजों में भी अंतर है, जिसे भी फिल्म में दर्शाया जा सकता है। राजा खोई, दूधी नदी के अद्भुत नजारे, शादी ब्याह के नजारे, पंचायत सभा, मुस्लिम लोगों से संपर्क, सहरा पचगोल में आंगनवाड़ी व प्राथमिक शालाओं की वो मासूम कक्षाए और बच्चो के हाव भाव, गांव की दुकाने और उन पर बैठे लोग आदि का फिल्मांकन कर सकते है।

पौधा संरक्षण क्षेत्र कपुरनाला, एम पी सी ए परिक्षेत्र देलाखारी, छोटी सी गाड़ी पर बैठे कई गुना लोग, युएनडीपी के प्रोजेक्ट पर चलते काम, चारो तरफ फैला जंगल, पौधा रोपण, बीज के लिए फल फोड़ती महिलाए, छोटे छोटे नाले और जंगली जानवरो के पैरो के निशान, नदियों में बने पत्थरों के कटाव पातालकोट व्यु पाईंट, अधिकारियों, भारिया महिला व पुरूष तथा शिक्षकों का इंटरव्यु। गैस्ट हॉउस (तामिया से पातालकोट का क्षेत्र का नजारा), रात को उड़ते चमगादड़ ,भारिया लोगो की मेहमान नवाजी, विशेष चटनी मक्का की रोटी, मउवा की रोटी व पुरी टमाटर की चटनी, मउवा के फल को सेंक कर खाना, पेजा चावल से बना पेय, इन सब को बनाने की विधि, और भी बहुत कुछ है पातालकोट के भारिया लोगो के पास जिसे फिल्माया जाकर डाक्युमेंट्री बनाई जा

सकती है। उपरोक्त जो लिखा है वह तो भारिया की विषाल दुनिया में कुछ ही मोती है इसमें जनजातियों के आधारभूत स्ट्रक्चर को साथ में फिल्माया जाए तब डाक्युमेंट्री पूर्ण रूप से बन जाएगी। ये आने वाली दुनिया में भारिया लोगो का वीडियों जिसे खुद भारिया लोगो की आने वाली पीढ़ीयाँ देख कर समझ जाएगी।

जनजातियों पर डाक्युमेंट्री निर्माण के लिए कई आवश्यक तत्व हो सकते है, उपरोक्त दिए गए तत्व आधारभूत मुद्दो को दर्शाते है, इसके अलावा सरकार की स्वास्थ्य संबंधी योजनाए, रोड, जंगल, शिक्षा छात्रावास, बाजार सौंदर्य से जुड़ी दुकाने, पहनावा, रहन सहन, मछली पकड़ना, पशु पालन, देवी–देवता, तेंदु पत्ता, मउवा की रस्सी, वनोपज आदि ऐसे विषय है जो आसानी से फिल्माए जा सकते है।

इथिनोग्राफिक फिल्म

इथिनोग्राफिक फिल्में समाज की संस्कृति, परंपराओं, रीति रिवाजो को लोगो को बताती है। गेस्टन रोबर्ज ने सामाजिक सिनेमा का इस प्रकार वर्णन किया है कि – वह फिल्म जो दर्शकों के बीच केन्द्रीय मुद्दों पर जागरूकता को बढाती है, वह फिल्म जो दर्शकों को संवेदनशीलता का पाठ पढाती है, वह फिल्म जो सत्य पर आधारित होती है, वह फिल्म जो मानवीय मूल्यों को बढावा देती है। जब भी किसी सत्य घटना के संबंध में शोध कार्य किया जाता है तो उसकी अपनी सीमाएं है जो बजट, समय पर आकर रूकती है, परंतु फिर भी चैलेन्जेस बने रहते हैं। ऐसे कई महिलाए और पुरूष रहे हैं जिन्होने डाक्युमेंट्री की दुनिया में कदम रखा पर वे मात्र एक ही फिल्म तक सीमित रहे जिसका मुख्य कारण बजट, पैसी की कमी साबित हुआ।

जनजाति पर डाक्युमेंट्री निर्माण किस प्रकार हो

जनजातिय संस्कृति, परंपराए, मान्यताए, रहन सहन, खान पान, प्राकृतिक क्षेत्र, उनकी मेहनत और संघर्ष आदि सभी पहलु डाक्युमेंट्री के महत्वपूर्ण पहलू है। बात की जाए पारंपरिक खाद्य पदार्थो एवं भोजन की तो उन्हे उगाने से लेकर, अनाज निकालने तथा एक ही तरह के खाद्य पदार्थो को बनाने की अलग –अलग प्रकार की रेसिपी, उस भोजन के स्वाद की जरूरत, उसमे मिलने वाले मसाले, उन मसालों को लाने की जरूरते, तरीके, उपयोग, भोजन का महत्व आदि डाक्युमेंट्री में जान भरते है। यह तब भी होता है जब बात संगीत की हो, जनजाति वाद्ययंत्रो के बजाने के तरीके, ये वाद्ययंत्र बनते कैसे हैं, उनका क्या महत्व है, कौन उन्हें बजाता है, कब उन्हे नहीं बजाया जा सकता है, ये विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक कैसे पहुँचती है, ये जनजाति फिल्मों को बेहतर बनाती है। जनजाति डाक्युमेंट्री में एक जरूरी हिस्सा है उनके हथियार, वो कितने तरीके के होते है, किस प्रकार बनाए जाते हैं, उनके उपयोग का तरीका, तथा उपयोग करने वाले लोग, हथियारो से जुड़ी मान्यताएँ, कैसे उन्हे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपा जाता है आदि।

जनजातियों की दुनिया त्यौहारो से भरी है, ये त्यौहार उनकी जिंदगी में रंगो को दिखाते है, इन रंगो में खुशियाँ, मान्यताएं, परंपराएं सीधे तौर पर देखने को मिलती है। जिन जनजातियों ने अपना धर्म परिवर्तन किया उनके इन रंगो में बदलाव हुए है। ये सारे रंग डाक्युमेंट्री फिल्मिंग के लिए बहुत जरूरी पहलू है। जनजातीय चित्रकारी उनके दरवाजों, घरों, पशुओं हथियारों शरीरों पर दिखाई देती है जो आज भी रॉक पेंटिंग से मिलती जुलती है। जनजातियॉ अपने जन्म संस्कार, विवाह समारोह, अंतिम संस्कार आदि को अलग अलग तरह से मनाती है, एक ही जनजाति में इन्हे मनाने के कई तरीके मौजूद है। ये सारे तरीके फिल्म बनाने में रोचकता पैदा करते है । जनजातिय जीवन में सरकार की योजनाओं का प्रभाव, तथा योजनाओं से उनके जीवन में आए बदलावों को भी दर्शाया जा सकता है। जनजातिया कुपोषण, बीमारियों, गरीबी से हमेशा जुझती है, यहॉ डाक्युमेंट्री फिल्मिंग में उनके संघर्षो के कई भावनात्मक पल मौजूद है। जनजातियॉं और मुख्य धारा के लोग अपने सामाजिक मेल जोल में आपसी सामंजस्य स्थापित करते है, वह महत्वपूर्ण है। जनजातियों का जंगलो और वन्य प्राणियों से बहुत गहरा रिश्ता है, उनकी संपूर्ण निर्भरता वनोपज व कृषि कार्यो पर आधारित है। जनजातिय फिल्म निर्माण में उस क्षेत्र में काम करने वाले कुछ एनजीओ कार्यकर्ताओं, सरकारी अफसरों या अन्य संस्था के लोगो द्वारा दिए गए इंटरव्यु को दिखाया जा सकता है, जो जनजातियों की समस्याओं को समझते है। जनजातिया हमेशा ही भौगौलिक रूप से खूबसूरत और एकांत जगहो पर रही है, इन जगहों से उसने अपने सामाजिक जीवन का ताना बाना बुना है, मान्यताएं बनाई है, जहॉ उनके देवता रहते है या उनकी पवित्र जगहे मौजूद है। प्रकृति की सुंदरता से भरपूर ये क्षेत्र डाक्युमेंट्री को और खूबसूरत बनाते है। जनजातिय क्षेत्रों में बहती नदियॉं, जैव विविधता और जनजाति द्वारा उनका उपयोग, घरों में अनाज भंडारण, बारिश के पहले उनकी तैयारी, पालतु पशुओं को बांधने के स्थान आदि सब मिलकर डाक्युमेंट्री को बेहतर बनाते है।

निष्कर्ष

डाक्युमेंट्री फिल्मिंग की अपनी सीमा है, जो बजट, समय, मौसम पर आधारित है। एक बार में कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को सॅजोती हैं। जिस वजह से वो एक झलक देती है किसी जनजाति के प्रतिनिधित्व की। आज आवश्यकता है जनजाति डाक्युमेंट्री निमार्ण के प्रोत्साहन की, देश विदेश के चैनलों में इनके प्रसारण की, बाहरी लोगो द्वारा इन्हे देखे जाने व पसंद किए जाने की ताकि जनजातियों के रोजमर्रा का जीवन, उनका संघर्ष, उनकी तकलीफें, सरकार और उनके बीच में संबंध, उनकी खासियतें, उनका इंडिजीनियस ज्ञान, प्रकृति के प्रति उनका सम्मान, प्रेम तथा कदम से कदम मिलाकर चलना, समझा और जाना जा सके।

Reference

Cao, Qing. (2007). China Through Western Eyes: A Case Study of the BBC Television Documentary Roads to Xanadu. European Journal

Shoma, A chatterji, (1996), the ethnographical documentary, spectrum india, 4th ed. (Mumbai: international film festival for documentary, short and animation films, 29th January to 5th February, 1996), 11-33.

Trinh T. minha,(1992), "rethinking the subject of ethno documentary ", in visual anthropology and

india, ed, K.S. Singh (1992). Brundtland commission "our common future" (1987), Oxford university press.

Waugh Thomas, (1998). "Independent documentary in india : A preliminary report," visual anthropology review 4(2): 164-175.

सिन्हा, एस. (2014) : सेंसस ऑफ इंडिया 2011, मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट सेंसस हेण्डबुक, श्योपुर, सीरीज 24 पार्ट XII ए, डायरेक्टोरेट ऑफ सेंसस आपरेषन्स, मध्यप्रदेश, भोपाल

सिन्हा, एस. (2014) : सेंसस ऑफ इंडिया 2011, मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट सेंसस हेण्डबुक, श्योपुर, सीरीज 24 पार्ट XII ए, डायरेक्टोरेट ऑफ सेंसस आपरेषन्स, मध्यप्रदेश, भोपालए, क्र 6 पृ 30

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/Documentary/docu%20journels/Nichols_Documentary%20and%20Avant-Garde.pdf.

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/Documentary/docu%20journels/docu%20eric%20journels/EJ1098506.pdf

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/Documentary/docu%20journels/docu%20eric%20journels/EJ1067420.pdf

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/Documentary/docu%20journels/docu%20eric%20journels/EJ1067420.pdf

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/Documentary/docu%20journels/docu%20eric%20journels/EJ1103788.pdf

http://komunikasi.unsoed.ac.id/sites/default/files/SINEMATOGRAFI%20III%20DOCUMENTARY%20FILM%20by%20%20PATRICIA%20AUFDERHEIDE%20edit%201.pdf

http://tuoitrenews.vn/lifestyle%20/14802/my-passion-for-documentary-filmmaking-moves-me-forward-jonathan-harris

http://tuoitrenews.vn/lifestyle/14802/my-passion-for-documentary-filmmaking-moves-me-forward-jonathan-harris

http://tuoitrenews.vn/lifestyle/14802/my-passion-for-documentary-filmMaking-moves-me-forward-jonathan-harris.

http://library.imageworks.com/pdfs/imageworks-library-Surfs-Up-the-making-of-an-animated-documentary.pdf

http://www.unesco.org/new/fileadmin/MULTIMEDIA/HQ/CI/CI/pdf/programme_doc_documentary_script.pdf

https://www.goodreads.com/book/show/13479423-how-to-write-a-documentary-script

https://books.google.co.in/books?id=Ps5mDAAAQBAJ&pg=PT167&lpg=PT167&dq=how+to+write+a+documentary+script+a+monograph+by+trisha+das&source=bl&ots=9TfZEeq0Xq&sig=ACfU3U2rrCniEiauIcqXIdGCQZmQnC9Iqg&hl=hi&sa=X&ved=2ahUKEwiC_faRgeTgAhWCaCsKHedSBoUQ6AEwD3oECAAQAQ#v=onepage&q=how%20to%20write%20a%20documentary%20script%20a%20monograph%20by%20trisha%20das&f=false

https://dadospdf.com/download/how-to-write-a-documentary-script-_5a4c953eb7d7bcab6719d12c_pdf

http://skola.restarted.hr/wp-content/uploads/2014/06/Bill-Nichols-Introduction-to-documentary.pdf

http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/1872/9/09_chapter3.pdf

http://home.fa.utl.pt/~cfig/Anima%E7%E3o%20e%20Cinema/Cinema%20de%20Document%E1rio/The_Documentary_Handbook%20-%20Peter%20Lee-Wright.pdf

https://www.academia.edu/36549181/Documentary_Film_in_India_An_Anthropological_History_Preface_and_Intro.pdf

https://www.jfki.fu-berlin.de/academics/SummerSchool/Dateien2011/Papers/hoenisch_sapino.pdf

http://faculty.salisbury.edu/~axsharma/MyWebs/HistoryDoc/Documentary%20Types.pdf

https://www.theseus.fi/bitstream/handle/10024/127458/annerajala_thesis2017.pdf?sequence=1

https://www.qub.ac.uk/sites/media/Media,396697,en.pdf

http://archive.cmsimpact.org/sites/default/files/docs_on_a_mission.pdf

http://faculty.fiu.edu/~surisc/documentary.pdf

https://www.researchgate.net/publication/220686229_Interactive_documentaries_A_Golden_Age

https://www.researchgate.net/publication/269605209_Authenticity_and_realism_in_documentary_sound

http://artsites.ucsc.edu/faculty/gustafson/film%20161.f08/readings/griersonprinciples.pdf

http://historymatters.gmu.edu/mse/photos/photos.pdf

https://www.sonyclassics.com/insidejob/_pdf/insidejob_presskit.pdf

http://www.agifreu.com/web_dmi/articles/Interactive_multimedia_documentary_PrePHD_Ch3_Arnau_Gifreu.pdf

https://www.documentary.org/images/programs/fsp/IntroDocBudgetBahar.pdf

https://arxiv.org/pdf/1101.0663.pdf

http://www.cs.umd.edu/~mvz/bible/doc-hyp.pdf

http://www.interpares.org/display_file.cfm?doc=ip1_template_for_analysis.pdf

ftp://ftp.ncdc.noaa.gov/pub/data/paleo/historical/documentary.pdf

ftp://ftp.ncdc.noaa.gov/pub/data/paleo/historical/documentary.pdf

http://elcv.art.br/santoandre/biblioteca/_em_ingles/film_and_cinema_eBooks_collection/Writing%20%20Directing%20and%20Producing%20Documentary%20Films%20and%20Videos.pdf

http://library.imageworks.com/pdfs/imageworks-library-Surfs-Up-the-making-of-an-animated-documentary.pdf

http://117.239.40.246/kbs/administrative/rdc_reports/functional_review_of_departments_of_gom/tribal_development_department.pdf

http://tribal.nic.in/Content/DefinitionATDevelopment.aspx

http://tribal.nic.in/Content/IntegratedTribalDevelopmentITDPsITDA.aspx

http://tribal.nic.in/Content/IntegratedTribalDevelopmentITDPsITDA.aspx
http://tribal.nic.in/Content/List%20of%20ITDA%20MADA%20Pockets%20Clusters%20PTGs.aspx
http://tribal.nic.in/content/list%20of%20scheduled%20tribes%20in%20India.aspx
http://tribal.nic.in/content/list%20of%20scheduled%20tribes%20in%20India.aspx
http://tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/20130603020403911375 1StatewisePTGsList.pdf
http://tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/20130603020403911375 1StatewisePTGsList.pdf
http://tribal.nic.in/WriteReadData/userfiles/file/Statistics/StatisticalProfileofSTs2013.pdf
http://unicef.in/Uploads/Resources/Tribal-low-res-for-view.pdf
http://www.historydiscussion.net/essay/tribal-movements-in-india/1797
http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Tribal%20Committee%20Report,%20May-June%202014.pdf
http://www.kcgjournal.org/humanity/issue21/jitendra.php
http://www.kractivist.org/wp-content/uploads/2014/12/Tribal-Committee-Report-May-June-2014.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/9NationalTrAwGuidlns.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/16firstNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/17SecondNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/18SplNCSTReport(mainReport).pdf
http://www.historydiscussion.net/essay/tribal-movements-in-india/1797
http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Tribal%20Committee%20Report,%20May-June%202014.pdf
http://www.kcgjournal.org/humanity/issue21/jitendra.php
http://www.kractivist.org/wp-content/uploads/2014/12/Tribal-Committee-Report-May-June-2014.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/9NationalTrAwGuidlns.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/16firstNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/17SecondNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/18SplNCSTReport(mainReport).pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/19SpecialNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/4thNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/5thNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/5thNCSTReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2016-17.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2015-16.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2014-15.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2004-05.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2005-06.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2006-07.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2008-09.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2009-10.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2010-11.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2011-12.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2012-13.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2013-14.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/BhuriaReportFinal.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/DevelopmentChallengesinExtremistAffectedAreas.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/LokurCommitteeReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/Mungekar3rdreport2.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/NACRecommendationsforPVTGs.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/ScheduledTribesinIndiaasRevealedinCensus2011.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/TwelfthFiveYearPlan2012-17.pdf
http://www.tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201409181141029304179SplReportInnerCoverPage.pdf
http://www.tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201504291141421695180AnnualReport2014-15.pdf
http://www.mdws.gov.in/sites/default/files/Tribal_Development_Plan.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/andaman.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/13-detailofFundReleased.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/1-revisedScheme.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/3-invitationofApplication.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/4-preventionofAtrocities.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/5-minutesofMeeting.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/6-invitationofProposal.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/10TribalFestiGuidlns.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCSTRM/13GuidelinesandRulesofPhotoCotest.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/8exchangeofVisits.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/Revisedguidelines.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/reserveNoti.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/RM/MinutesApex2June2017.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/SwLPVTGs.pdf
http://www.tribal.gov.in/livelihoodSupport.aspx
http://www.tribal.gov.in/pvtg.aspx
http://www.tribal.gov.in/researchandMedia.aspx
http://www.tribal.gov.in/ST/3-STinindiaascensus2011_compressed.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/LatestListofScheduledtribes.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/ListofScheduledTribes(STs)withVerylowliteracyrate.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/Statement-State-DistrictwiseSTLiteracyRate-edited.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/StatewisePvTGsList.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/StatisticalProfileofSTs2013.pdf
https://www.hindiaudionotes.in/2016/06/tribal-revolts-before-indian independence.html
https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/summary-of-the-tribal-rebellions-during-british-rule-in-india-1521541943-1
https://www.mpinfo.org/MPinfoStatic/hindi/factfile/janbaiga.asp
https://www.rasjunction.com/2018/03/tribal-movements-of-india-ras-mains.html